नाम - कौशलेश कुमार
कक्षा - बी.ए. II

जनजातियों के अर्थ, परिभाषा व समस्या को लिखिये ?

जनजाति का अर्थ ⇒

भारत में कुछ ऐसे भी लोग पाये जाते हैं जो जन्म से निम्न श्रेणी के होते हैं और उन्नति की राह पर नहीं चलते हैं। ये लोग प्रायः जंगलों में झुण्ड बनाकर रहते हैं। इसके जीवन पर प्राचीनतम संस्कृति का प्रभाव दिखाई पड़ता है। ये लोग जनजाति या आदिवासी आदि नामों से पुकारे जाते हैं। साधारणतया जनजाति का तात्पर्य एक ऐसे मानव समूह से समझा लिया जाता है जिसके रीति-रिवाज और रहन-सहन बहुत आदिम प्रकृति के हो। वास्तविकता यह है कि सुनी-सुनायी बातों के आधार पर हम एक जनजातीय समूह, समुदाय को जितना आदिम और असभ्य समझते होते हैं, व्यवहारिक रूप से स्थिति इससे बहुत भिन्न है। जन जातियों को 'आदिवासी' शब्द से केवल इसलिए सम्बोधित किया जाता है कि वे मानव की आदिकालीन संस्कृति की प्रतिनिधी हैं।

विभिन्न विद्वानों की परिभाषा ⇒

① राल्फ लिंटन ⇒ जनजाति समान संस्कृति वाली जनसंख्या को एक स्वतंत्र राजनीतिक विभाजन है।

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

Page No.
Date: / /

(2) इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया

'जनजाति' विकास के आदिम अथवा बर्बर आचरण में लोगों का एक समूह है जो एक मुखिया की सत्ता स्वीकारते हुए हो तथा साधारणतया अपना एक समान पूर्वज मानते है।

(3) गिलिन और गिलिन के अनुसार,

जनजाति उन विभिन्न समूहों से बनने वाला एक बड़ा समुदाय है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है, एक सामान्य भाषा का प्रयोग करता है, तथा जिसकी संस्कृति में समानता पायी जाती है।

(4) राल्फ पिडिंगटन के शब्दों में,

"जनजाति को व्यक्तियों के एक ऐसे समुदाय के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है जो एक समान भाषा बोलता हो, समान भू-भाग में निवास करता हो तथा जिसकी संस्कृति में समानता पायी जाती हो।"

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

(5) डॉ. रिवर्स के मतानुसार

"जनजाति एक ऐसा सरल प्रकार का सामाजिक समूह है जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं तथा युद्ध आदि सामान्य उद्देश्यों के लिए सम्मिलित रूप से कार्य करते हैं।"

(6) बोआस के अनुसार

"जनजाति से हमारा तात्पर्य आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व्यक्तियों के ऐसे समूह है जो सामान्य भाषा बोलते हों तथा बाह्य आक्रमण से अपनी रक्षा करने के लिए संगठित हों।"

जनजातियों के समस्यायें ⇒

(1) ऋणग्रस्तता

भारतीय जनजातियों की समस्याओं में संभवतः ऋणग्रस्तता की समस्या सबसे कठिन है, जिसके कारण जनजातीय लोग साहूकारों के शोषण का शिकार होते हैं ठेकेदार तथा अन्य लोगों से सीधे सम्पर्क होने के कारण उनमें से कुछ लोगों को

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College

छोड़कर समस्त भारतीय जनजातीय जनसंख्या ऋणो के बोझ से दबी हुई है। इस ऋणग्रस्तता का कारण है, निर्धनता, भुखमरी तथा दुर्बल आर्थिक व्यवस्था। मानवशास्त्रीय अध्ययनों तथा प्रमाणों से यह स्पष्ट पता चलता है कि ठेकेदारों तथा अन्य लोगों के द्वारा इनके क्षेत्रों मे हस्तक्षेप के पूर्व ये जनजातियाँ इतनी दुर्बल, निर्धन तथा विवश नहीं थी। ये लोग आर्थिक रूप से निर्भर हैं।

सभी जनजातियों समुदाय की ऋणग्रस्तता के कुछ मुख्य कारण है:-

(1) भूमि तथा वनों पर जनजातियो अधिकारों का हनन

(2) कृषि के पुराने तरीके के कारण कम उत्पादन

(3) उपेक्षा तथा जहालत

(4) विवाह, मृत्यु, मेलो तथा उत्सवो मे अपनी क्षमता से अधिक व्यय करने की प्रवृत्ति

(5) भाग्यवादी प्रवृत्ति व संकुचित विचारधारा

(6) बिरादरी से निष्कासित किये जाने के भय से जुर्माने के सम्बन्ध मे पंचायत के आदेशों का पालन।

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

(e) भूमि हस्तांतरण

नवीनतम आँकड़ों के अनुसार जनजातीय जनसंख्या का लगभग 88 प्रतिशत भाग कृषक है। जनजातियों का अपनी भूमि से बहुत भावनात्मक लगाव रहता है। जीवन-यापन के लिये कृषि ही एक ऐसा साधन है जो जिस पर ये लोग सदियों से निर्भर है। अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजाति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार मैदानों में रहने वालों की भाँति जनजातीय लोग भी भूमि के स्वामित्व की तीव्र इच्छा रखते है। भूमि भूस्वामी होने के और विभिन्न कारण है। अस्थायी कृषकों की संख्या लगातार बढ़ रही है तथा भूमि का दायरा सिकुड़ रहा है तथा इसके साथ स्थायी कृषकोंकी भी संख्या में वृद्धि हुई है। बढ़ती जनसंख्या के कारण भूमि की मांग में वृद्धि हुई है।

(f) गरीबी

निःसन्देह दीर्घकालीन व्यापक गरीबी भारत के औपनिवेशिक इतिहास में शुरू से ही चली आ रही है। अपनी आर्थिक समस्याओं को हल करने और सर्वतोमुखी विकास करने के हमारे प्रयास हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के साथ ही शुरू हुए। इन्होंने कई मामलों में देश का कायाकल्प भी किया, जैसे ठोस

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

औद्योगीकरण, हरितक्रांति जिससे देश में आवश्यकता से अधिक खाद्यान्न पैदा होने लगा, औसत जीवनावधि में वृद्धि हुई, मध्य वर्ग की समृद्धि तेजी से वृद्धि हुई, हमारे नियोजन का विरोधाभाष यह है कि वह भारत के गरीबों के जीवन-स्तर को ऊंचा करने में असफल रहा। गरीबी नीचे स्तर के प्रति व्यक्ति आय में स्पष्ट रूप से निरन्तर दृष्टिगोचर होती रही है। और देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी की रेखा के नीचे ही गुजर-बसर कर रहा है। गरीबी की यह रेखा पहले 3500 रुपये के उपभोग-स्तर पर था और बाद में वह अपने संशोधित रूप से में 6400 रुपये के उपभोग स्तर पर पहुंच गई।

(6) बेरोजगारी

जनजातियों की स्थिति और सम्बन्धी रोजगार की समीक्षा करने के पहले हमें भारत की जनजाति आबादी के व्यवसायिक ढांचे के बारे में थोड़ा बहुत समझ लेना चाहिये। जनजातियों का एक बहुत बड़ा बहुमत (लगभग 85 प्रतिशत) कृषि क्षेत्र में काम करता है। उसमें कुछ किसान है कुछ सीमांतक खेती करते है और शेष खेतिहर मजदूर हैं। उनका एक छोटा हिस्सा औद्योगिक क्षेत्र में है। वे कारखाने में मजदूरी

Principal
B.C.S. Govt. P.G. College
Dhamtari (C.G.)

करते हैं। उनका एक छोटा हिस्सा औद्योगिक क्षेत्र में है। वे कारखाने में मजदूरी करते हैं। कुछ समूह जिनमें नीलगिरी पर्वत (

(6) मदिरापान

जनजातियों में मदिरापान का अत्यधिक चलन है। अधिकतर जनजातियाँ मदिरापान के सम्बन्ध में बहुत संवेदनशील हैं तथा महुए के पेड़ को पवित्र मानती हैं। मदिरापान सदियों से उनकी सामाजिक परम्पराओं का एक भाग है। इस प्रकार के अव्यवसायिक समाज में मदिरा को भी भूमि के अन्य उत्पादों के स्तर पर ही रखा जाता है। ये जनजातियाँ अपने घरों में मदिरा बनाती हैं तथा इस प्रकार के अधिकतर पेयों में कोई विशेष नशा नहीं होता है। मदिरा अधिकतर शक्तिवर्धक का कार्य करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि मदिरापान इन जनजातियों के रीति-रिवाजों का एक अभिन्न अंग है तथा इसकी सामाजिक परंपराओं में घुल-मिल गयी है।
बाजरे तथा चावल द्वारा अपने घरों में बनायी गयी मदिरा जनजातियों में बहुत लोकप्रिय है।

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

Page No.
Date : / /

(7) औद्योगीकरण तथा नगरीकरण

भुखमरी तथा शोषण विश्वभर की जनजातियों की मूल समस्या है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। आश्चर्यजनक तथ्य है यह है " हमारी कुछ जनजातियाँ ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं जो वनों तथा खनिजों जैसी प्राकृतिक संपदाओं से भरे पड़े ऐसे क्षेत्रों में रहती हैं जो वनों तथा खनिजों जैसी प्राकृतिक संपदाओं से भरे पड़े हैं" स्वतंत्रता के बाद कच्चे माल तथा विद्युत सिंचाई की विस्तृत परियोजनाओं में इन प्राकृतिक संपदाओं का प्रयोग किया गया। राउरकेला, भिलाई, कैलाडीला तथा हीराकुण्ड परियोजना इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। जनजातियों का आर्थिक उत्थान इन विकास योजनाओं का तर्कसंगत परिणाम होना चाहिए था परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इन सीधे-साधे लोगों की भूमि ले ली गयी तथा इन्हें इस भूमि के बहुत कम दाम दिये गये। जो धन इन्हें भूमि के बदले मिला उसे इन लोगों ने मदिरा पान तथा अन्य अमान्य जनजातीय तत्वों उत्सवों में व्यय कर दिया। इस प्रक्रिया में अधिकतर परिवार भूमिरहित तथा कंगाल हो गये।

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

(8) आर्थिक समस्यायें

वर्तमान समय मे अधिकांश मानवों की मुख्य समस्या आर्थिक पक्ष से है जुड़ी हुई प्रदर्शित होती है। क्योंकि आर्थिक पक्ष से व्यक्ति की मुख्य आवश्यकताएँ उदरपूर्ति, पहनने के लिए वस्त्र तथा रहने के लिए आवास की समस्या को हल किया जाता है। अनुसूचित जनजाति समाज पूर्व से ही सभ्य समाज से बहुत पिछड़ा है जिसके फलस्वरूप ये अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति मे विभिन्न प्रकार की समस्याओं तथा कठिनाइयों से जूझ रहे हैं।

(i) कृषि की समस्या।

पूर्व से ही जनजातियों द्वारा स्थानान्तरण खेती की जाती रही है। स्थानान्तरण का आशय एक स्थान पर एक या दो या तीन बार कृषि का स्थान बदल दिया जाता है। अधिकांशतः एक स्थान से खेती एक विशेष प्रक्रिया मे होती है। सर्वप्रथम जंगल के भाग मे खेती की जाती है. उस भाग मे जंगल को काटकर साफ करके लकड़ी या घास-फूस को एकत्रित करके उसमे आग लगा दी जाती है। और लकड़िया से जो राख प्राप्त होती है। उसे साफ किये स्थान पर फैला दिया जाता है और इसके पश्चात उस स्थान पर बीज बोए जाते है इस प्रकार दो या दो से तीन फसलें प्राप्त करते है वहीं दूसरी ओर

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

भूमि की उर्वरता शक्ति क्षीण होती है जाती है।
इस प्रकार की कानूनी रोक या प्रतिबन्ध
लगने के कारण जनजातियों में आर्थिक
समस्या ने विकराल रूप ले लिया है।

(iii) भूमि की समस्या।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पूर्व जनजातियाँ जंगलों में अपनी इच्छा तथा आवश्यकतानुसार भूमि पर अधिकार करके उपयोग करती रहती है थी। किन्तु नवीन कानूनों में इनकी इस प्रकार की स्वतंत्रता पर रोक लगा दी जिससे न तो ये अपनी इच्छानुसार किसी भी स्थान पर अनाधिकृत रूप से कृषि कार्य ही कर सकता है। और न ही जंगलों की कटाई ही कर सकती है। इस कारण जनजातियों में भूमि की समस्या उत्पन्न हो गई सरकार ने जनजातियों को इस समस्या को हल करने हेतु इन्हें भूमियों का स्वामी बनाया जिससे ये अपने परिवारों की उदरपूर्ति हेतु बाहर होती जा रही है। होशियार एवं चतुर साहूकार, सूबेदार तथा महाजन इनके सीधेपन का नाजायज फायदा उठाकर थोड़ा कर्ज देकर इनकी जमीन पर कब्जा कर लेता है। इस प्रकार भूमि की समस्या अनेक आर्थिक पहलुओं से जुड़ी है।

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

जंगल की समस्यायें

नवीन कानूनों के पूर्व जनजातियों का वनों तथा आस-पास के जंगलों के भोगने पर स्वामित्व जैसा था। वे बिना किसी रोक-टोक या प्रतिबन्ध के वन सम्पत्तियों अर्थात् जंगली फल, फूल, लकड़ी, घास, पशु-पक्षी व कसलें आदि का उपयोग करते थे। किन्तु इन सब चीजों में पर सरकार का नियंत्रण होने से इनमें एक नवीन समस्या का सूत्रपात हो गया। जंगल विभाग के अधिकारियों के आने के कारण भी इनका जीवन यापन करना मुश्किल होने लगा।

(ङ) शिक्षा सम्बन्धी समस्यायें

अधिकांश जनजातियां दुर्गम स्थलों जंगलों तथा वन्य भागों में निवास करती है। जहाँ शिक्षा रूपी प्रकाश आज भी नहीं पहुँच पाया फलतः ये अज्ञानता के अंधकार में जीवनयापन कर रही है और यदि यह कहा जाये कि इनकी समस्त समस्याओं की जड़ ही अशिक्षा है। अतिशयोक्ति न होगी शासकीय प्रयासों द्वारा भी जनजातियों भारी भागों में अशिक्षा है। क्योंकि साधनों का पर्याप्त अभाव है। साथ ही इन शिक्षालयों के शिक्षक जो कि सभ्य समाज के होते हैं वे स्वेच्छ स्वेच्छानुसार अभावग्रस्त

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

लोगो में रहना भी नहीं चाहते और जो किन्ही कारण वश रहते है। वर्तमान समय में शिक्षा को जिस ढंग से फैलाया जा रहा है अर्थात् प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। उससे जनजाति समाज में भी शिक्षित बेरोजगारी की समस्या मुखर रही है।

(18) सामाजिक समस्याएँ :-

जनजातियों समाज सभ्य समाज के सम्पर्क में आने पर जनजातीय समाजों में अनेक सामाजिक समस्याओं का फैलाव हो गया है। पहले जनजातियों में कन्या मूल्य, भिन्न वस्तुओं व जानवरों के रूप में दिया जाता है था। इसमें भी परिवार की क्षमतानुसार तथा इच्छानुसार कन्या मूल्य देने का प्रचलन था किन्तु हिन्दुओं के सम्पर्क में आने के पश्चात कन्या मूल्य रूपया पैसो के रूप में होने लगा दहेज समस्या जो कि सभ्य समाज की देन है। से जनजातीय समाज पीड़ित होने लगा और दहेज प्रथा का का फैलाव होने लगा। इसके अतिरिक्त युवागृह या घोटुल जो कि इनके सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक तथा प्रशासनिक गतिविधियों के केन्द्र थे जनजातियों की आर्थिक विपन्नता तथा भोलेपन का फायदा उठाकर तथा अनेक प्रलोभन देकर सभ्य समाज के सदस्य इनकी

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

स्त्रियों के साथ अनैतिक यौन संबंध स्थापित करना। नगरो मे जाकर वेश्यावृत्ति कराना तथा अस्थायी रूप से रहने लगते है वे अपने सीजन तथा संग सोहबत मे यौन संतुष्टि हेतु वेश्याओ के यहाँ जाने लगे। और अनेक रोग के शिकार हो जाते है। और घर पहुंचने पर रोग अपनी स्त्रियो मे फैलाते है। इस प्रकार जनजातियों मे अनेक सामाजिक समस्याएँ फैल गई है।

(11) स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ

स्वास्थ्य जीवन की सर्वश्रेष्ठ निधी माना जाता है स्वरूप व्यक्ति ही अपनी, अपने परिवार समाज तथा राष्ट्र का धर्म की बहुमुखी प्रगति करने मे उत्तम भूमिका निभा सकता है। जबकि अस्वस्थ व्यक्ति अपने आप पर जनजातियो मे फैली अज्ञानता, अशिक्षा अन्ध विश्वास, प्रचलित एवं परम्परागत मान्यताएँ धार्मिक विश्वास भाग्यविधाता आर्थिक विपन्नता व निर्धनता तथा पोषण आहार के ज्ञान का अभाव आदि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कारण तत्व माने जा सकते है जिनके संयुक्त प्रभाव स्वरूप स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याये उत्पन्न हो चुकी है। बीमारियो के वक्त से लोग झाड़ फूंक पर ही विश्वास करते है। जनजातियो क्षेत्रों मे चिकित्सालय की व्यवस्था है, भी वहाँ

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

डॉक्टर एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव रहता है। और जब जनजातियों के सदस्य गम्भीर बीमारीयों की गिरफ्त में आने पर स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों में पहुँच भी जाते है तो महंगी महंगी दवाईं एवं नर्सों का व्यवहार आदि के कारण ये झाड़ फूँक, जड़ी बूटियाँ तथा जादू-टोना आदि के द्वारा ही बीमारी ठीक करना अच्छा समझते हैं।

(12) सांस्कृतिक समस्याऐं

देश का अधिकांशतः जनजातियाँ दुर्गम स्थलों, वन्य क्षेत्रों तथा जंगलों में निवास करती हैं उसकी अपनी विशिष्ट संस्कृति थी। संस्कृति पर विचार प्रस्तुत करते हुए बीरस्टीड का कहना है कि, "संस्कृति वह सम्पूर्ण जटिलता है जिसमें वे सभी वस्तुएं सम्मिलित होती है, जिन पर हम विचार करते हैं, कार्य करते हैं, और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं। आपके विचारानुसार इसके अन्तर्गत जीवन जीने, कार्य करने या विचार करने के उन सभी तरीकों को सम्मिलित करते हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते है, जो कि समाज के स्वीकृत अंग बन चुके हैं। इसके अतिरिक्त जिन्होंने ईसाई संस्कृति को ग्रहण नहीं कर लिया

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

किन्तु पूर्णतः उन जैसा नहीं बन सके फलस्वरूप विभिन्न सांस्कृतिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं। इसी प्रकार हिन्दुओं के सम्पर्क संस्कृति को हीन समझने लगे। इस प्रकार दो संस्कृतियों के सम्पर्क में आने पर जनजातीय समाज में सांस्कृतिक विभेद की उत्पत्ति हुई। जिसके फलस्वरूप अनेक सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक समस्याएँ उत्पन्न हुई।

(13) एकीकरण की समस्या

भारतीय जनजातियों में अर्थ-व्यवस्था, समाज व्यवस्था, संस्कृति, धर्म एवं राजनीतिक व्यवस्था के आधार पर अनेक भिन्नताएँ पायी जाती है वे देश के अन्य लोगों से पृथक से जनजातियों अपने को अन्य लोगों से पृथक न समझकर देश की मुख्य जीवन धारा से जोड़े, तभी हम गरीबी, शोषण, अज्ञानता, अशिक्षा, बीमारी, बेकारी, हीन स्वास्थ्य की समस्याओं को से निपट सकेंगे।

(14) राजनीतिक चेतना की समस्या

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान के द्वारा देश के सभी नागरिकों को प्रजातान्त्रिक अधिकार प्रदान कर उन्हें शासन में हिस्सेदार

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)

बना दिया गया है। आज पंचायत से लेकर संसद तक के प्रतिनिधी आप जनता द्वारा चुने जाते है प्रजातन्त्र मे राजनीतिक दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनजातियो की परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था अपने ही ढंग की थी जिसमे अधिकांशत: वंशानुगत मुखिया ही प्रशासन सम्बन्धी कार्य करते थे। उनकी सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था मे प्रदत्त अधिकारो एवं मितव्ययी का विशेष महत्व था, किन्तु आज वे नवीन राजनीतिक व्यवस्था से परिचित हुए हैं। उन्हे भी मताधिकार प्राप्त है। वे अपनी सामाजिक - आर्थिक समस्याओं के प्रति सजग हैं।

(5) संचार =

सदियो से जनजातियाँ दूरवर्ती तथा अलग-अलग क्षेत्रो मे रहती आयीं है। संचार माध्यमो की कमी इसका मुख्य कारण है। जनजातीय क्षेत्रों के विकास तथा वहाँ की आर्थिक स्थितियो मे सुधार करने के लिए संचार व्यवस्था का होना अत्यन्त आवश्यक है। संचार व्यवस्थाओं का विकास जनजातियों की राष्ट्रीय जागरूकता तथा बौद्धिक विकास मे निश्चित रूप से सहायक होगा। ये संचार व्यवस्थायें जनजातीय क्षेत्रों की आर्थिक स्थितियो के सुधार मे भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। जनजातीय क्षेत्रों मे संचार व्यवस्था द्रुत तेजी से हुआ है।

इस प्रकार उपरोक्त जनजाति की समस्याएं है।

Principal
B.C.S. Govt. P. G. College
Dhamtari (C.G.)